

**QURAN - English Translations by Maulana Muhammad Ali and
by Dr. Muhammad Hilali and Muhammad Muhsin Khan**

Some Extracts (taken from Internet)

1. (9:5) So when the sacred months (the 1st, 7th, 11th and 12th months of the Islamic calendar) have passed, slay the idolaters, wherever you find them, and take them captive and besiege them and lie in wait for them in every ambush. But if they repent and keep up Muslim prayer and pay money for the poor Muslims (Zakat), leave their way free. Surely Allah is forgiving, merciful.
(Slay – kill in a violent way.
Besiege – Surround with Armed Forces
Ambush – Attack a person or group of people from a hidden position).
2. (9:23) O you who believe (Muslims), Take not your fathers and brothers for friends (supporters and helpers) if they prefer disbelief above faith. And whoever of you does so, then he is one of the Zalimun (wrong doers).
3. (9:123) O you who believe! Fight those of the disbelievers (Non Muslims) who are close to you, and let them find harshness in you, and know that Allah is with those who are the pious.
4. (8:12) I will cast terror into the hearts of those who disbelieve. So smite above the necks and smite every finger-tip of them.
(Smite- Hit with a hard blow).
5. (41:27) But surely we shall cause those who disbelieve to taste a severe torment, and certainly, we shall requite them the worst of what they used to do.
(Requite – to avenge)
6. (8:17) You killed them not, but Allah killed them.
7. (2:221) Marry not the idolatresses until they believe Nor give (believing woman) in marriage to idolaters until they believe.

8. (4:56) Surely, those who disbelieve in our Ayats, we shall burn them in fire as often as their skins are roasted through. We shall change them for other skins that they may taste the punishment.
9. (69:30-33) Seize him and fetter him. Then throw him in the blazing fire. Then fasten him with a chain whereof the length is seventy cubits. Surely he used not to believe in Allah, the Great.
(Seize – Take hold of suddenly and forcibly
cubit – An ancient measure of length, approximately equal to the length of a forearm.
10. (66:9) O Prophet ! Strive hard against the disbelievers and hypocrites, and be severe against them, their abode will be Hell, and worst indeed is that destination.
(Strive – Fight vigorously)
11. (5:10) They who disbelieve and deny our Ayats are those who will be the dwellers of the Hell Fire.
12. (4:101) Surely the disbelievers are an open enemy to you.
13. (2:254) And it is the disbelievers who are the zalimun (wrong doers).
14. (33:61) Accursed, wherever found they will be seized and killed with a slaughter.

कुरान की कुछ आयतों का हिन्दी अनुवाद

1. (9:5) जब पवित्र महीने (इस्लामिक कैलण्डर का पहला, सातवां, ग्यारहवां और बारहवां महीना) बीत जाएं तब मूर्तिपूजक जहां भी मिलें उन्हें कत्ल करो, उन्हें कैद करो, बलपूर्वक घेरो और उन पर हमला करने के लिए छुपकर प्रतीक्षा करो। परन्तु अगर वे पश्चाताप करें, मुस्लिम प्रेयर करें और गरीब मुस्लिमानों के लिए धन दें तो उन्हें छोड़ दो। निश्चित तौर पर अल्लाह क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।
2. (9:23) ऐ मुस्लिमानो ! अगर तुम्हारे पिता और भाई इस्लाम को स्वीकार नहीं करते तो उनसे मित्रता मत रखो। और तुम में से जो कोई उनसे मित्रता करता है वह भी अपराधी है।
3. (9:123) ऐ मुस्लिमानो जो गैर-मुस्लिमान तुम्हारे समीप हैं उनसे सख्ती से युद्ध करो और याद रखो अल्लाह उनके साथ है जो पवित्र हैं।
4. (8:12) गैर-मुस्लिमानों के दिलों में मैं आतंक बिठा दूंगा। उनकी गर्दनो पर और सब उंगलियों पर सख्त प्रहार करो।
5. (41:27) निश्चित तौर पर हम गैर-मुस्लिमानों को सख्त सजा देंगे और वे जो करते हैं उसका बदला लेंगे।
6. (8:17) तुमने उनको नहीं मारा, बल्कि अल्लाह ने मारा है।
7. (2:221) मूर्तिपूजक स्त्रियों से विवाह मत करो जब तक वे इस्लाम स्वीकार न कर लें.. अपनी स्त्रियों की मूर्तिपूजक पुरुषों से शादी मत करो जब तक वे मुस्लिमान न बन जाएं।
8. (4:56) जो लोग हमारी आयतों को अस्वीकार करते हैं, निश्चित तौर पर हम उन्हें आग में झोंक देंगे जब तक उनकी चमड़ियाँ जल न जाएं। हम उनकी चमड़ियों को बदल देंगे ताकि वे सजा का पूरा मजा भोग सकें।
9. (69:30-33) उसे अचानक और ताकत से पकड़ो, उसके पैरों में बेड़ी डालो, फिर जलती हुई आग में फेंक दो। फिर उसे सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बांध दो। उसे महान अल्लाह पर विश्वास न था।
10. (66:9) ओ नबी ! गैर-मुस्लिमानो और कपटी लोगों से बहुत सख्ती से लड़ो। उनके रहने का स्थान सबसे घटिया नर्क होगा।
11. (5:10) गैर-मुस्लिमान और हमारी आयतों को अस्वीकार करने वाले नर्क की आग में रहने वाले होंगे।
12. (4:101) गैर-मुस्लिमान निश्चित तौर पर तुम्हारे खुले शत्रु हैं।
13. (2:254) गैर-मुस्लिमान जालिम हैं।
14. (33:61) शाप दिए हुए लोग जहां भी मिलें उन्हें पकड़ो और उनका कत्ल करो।